पण्डित सामता प्रसाद

पं. सामता प्रसाद जी का जन्म वाराणसी के कबीर चौरा मुहल्ले में 18 जुलाई सन् 1920 को हुआ था। आपके पिता का नाम पं. बाचा मिश्र था। पं. बाचा मिश्र स्वयं तबले के अच्छे जानकार वादकों में से थे। अतएव पं. सामता प्रसाद को तबले की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर अपने पिता द्वारा प्राप्त हुई किन्तु यह दुर्भाग्य ही था कि मात्र आठ वर्ष की अल्प आयु में ही आप पिता की छत्रछाया से वंचित हो गए। अतएव तबले की आगे की शिक्षा आपको पं. बलदेव सहाय के शिष्य पं. बिक्कू जी महाराज द्वारा प्राप्त हुई। सामता प्रसाद जी बचपन से ही अत्यन्त घोर परिश्रमी थे अतः अपने घोर परिश्रम, साहस तथा कठिनाईयों को पार करते हुए तबला जगत में उन्होंने एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लिया।

इलाहाबाद के सन् 1942 के संगीत सम्मेलन में पहली बार आपको आमन्त्रित किया गया जहाँ आपने देश के महान कलाकारों के साथ चमत्कारपूर्ण संगति करके न केवल देश में ख्याति प्राप्त कर ली बल्कि विदेशों में भी अपने चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन से अपने तथा अपने देश का नाम रौशन किया। समय-समय पर आपको हंगरी, पूर्वी अफ्रीका, लन्दन, जर्मनी तथा अफगानिस्तान आदि देशों में अपनी कला के प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त होता रहा। इतना ही नहीं आपने विभिन्न फिल्मों में—हिन्दी फिल्म

Scanned with CamScanner

झनक-झनक पायल बाजे, दो आँखें बारह हाथ, बंगला फिल्म—असमाप्तो, 'जलसा घर' ढूली—आदि विभिन्न फिल्मों में भी अपना वादन प्रस्तुत कर लोकप्रियता हासिल की।

आपकी इन उपरोक्त गतिविधियों तथा वादन से प्रभावित होकर सन् 1971 में भारत के राष्ट्रपति ने आपको पद्मश्री की उपाधि से विभूषित किया। आपके दो पुत्र—कुमार लाल तथा कैलाश है जाकि तबले के अच्छे कलाकार हैं। इसके अतिरिक्त आपके शिष्यों में—सर्वश्री जे. मैसी, नवकुमार पण्डा, सत्यनारायण वशिष्ठ आदि के नाम उल्लेखनीय है।

पं. सामता प्रसाद जी का बाज बनारस का बाज है अतएव बनारस घराने के वादन की सारी विशेषताएँ—तैयारी, सफाई, जोरदारी आदि—का आपके वादन में आना स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त लग्गी-लड़ी का काम, नृत्य के साथ आपका वादन जनता को स्वतः ही आकर्षित कर लेता है। यहाँ यह उल्लेखनीय तथ्य है कि सामता प्रसाद जी कायदे के पल्टे करने में शास्त्रीय नियमों का कठोरता से पालन नहीं कर पाते।

पं. कण्ठे महाराज

पं. कण्ठे महाराज जी का जन्म लगभग सन् 1880 के आस-पास वाराणसी के कबीर चौरा मुहल्ले में हुआ था। आपके पिता श्री दिलीप महाराज की गिनती अच्छे तबला वादकों में की जाती थी। अत्यन्त कम उम्र में ही आपने बलदेव सहाय जी से संगीत शिक्षा प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया था। तालीम लेने का यह क्रम काफी लम्बे समय तक चला। बदलेव सहाय जी की माता आपकी सगी बुआ थी अतएव आपका और बलदेव सहाय जी का रिश्ता गुरु-शिष्य के अतिरिक्त मामा-फूफा के भाई-भाई का भी था। आपकी अपनी कोई सन्तान जीवित नहीं थी अतएव आपने अपने छोटे भाई श्री हरिप्रसाद के पुत्र जोकि आज के प्रसिद्ध तबला वादक पं. किशन महाराज है, को दत्तक पुत्र स्वीकार कर तबले की उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान की।

आपने देश में होने वाले लगभग सभी बड़े संगीत सम्मेलनों में भाग लिया। समय-समय पर आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा आपको अपना वादन प्रस्तुत करने का अवसर मिला। इन विभिन्न सुअवसरों का लाभ उठाते हुए आपने देश में अपनी वादन कला की धूम मचा दी इतना ही नहीं जब कभी किसी बुजुर्ग या घरानेदार शीर्ष कलाकार के साथ तबला संगत की बात होती तो आपको ही आमन्त्रित किया जाता। आपकी वादन-कला से प्रभावित होकर भारत के राष्ट्रपति द्वारा आपको सम्मानित भी किया गया।

आपकी वादन शैली शुद्ध बनारस घराने की थी। अतएव आपके वादन में लग्गी-लड़ी, विविध छन्द, बनारस अंग की गत, परन स्तुतियों का समावेश था। कठिन

Scanned with CamScanner

एवं अप्रचलित तालो में भी आप अपना वादन अत्यन्त सहजता पूर्वक प्रस्तुत करते थे।

आपके शिष्यों मे सर्वश्री पं. किशन महाराज, शारदा सहाय, आशुतोष भट्टाचार्य तथा नाटू बाबू का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 1 अगस्त सन् 1969 को वाराणसी जैसी पुण्य नगरी में आपका स्वर्गवास हो गया।

पं. किशन महाराज

पं. किशन महाराज जी का जन्म सन् 1923 को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था आपका जन्म चूँकि एक सांगीतिक परिवार में हुआ था अतएव आपको संगीत सम्बन्धी शिक्षा घर में ही प्राप्त हुई। आपके पिता श्री हरिप्रसाद जी पं. कण्ठे महाराज के छोटे भाई थे। पं. कण्ठे महाराज जी ने आपको अपना दत्तक पुत्र स्वीकार कर तबले की उच्च शिक्षा प्रदान की। तालीम प्राप्त करने के प्रारम्भिक वर्षों में ही आपकी रुचि लयकारी की ओर झुकने लगी। अतएव आपने तीनताल, झपताल, एकताल आदि मुख्य तथा प्राथमिक तालो को काफी लम्बे समय (कम से कम तीन वर्ष) तक नहीं बजाया बल्कि 9, 11, 13, 15, 17, 19 व 21 आदि मात्रा की वक्र तालों को बजाने में न केवल दिलचस्पी ली बल्कि उनका अनवरत अभ्यास भी किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि आपको सम संख्या वाली (सीधी या बराबर मात्रा वाली) तालें बजाना सरल लगने लगा। इतना ही नहीं किसी भी ताल में भिन्न-भिन्न प्रकार के टुकड़े व तिहाई बजाने में आपको महारथ हासिल हो गई।

आपकी वादन शैली बनारस घराने की है अतएव तैयारी, सफाई, स्पष्टता आपके वादन की खास विशेषता है। आपको अपने वादन के कारण न केवल देश में बल्कि विदेशों में प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त हुई। तबला वादन के दोनों पक्ष सोलों तथा संगति में आप निपुण थे। इतना ही नहीं ताल की विभिन्न मात्राओं से परनो का उठान वक्र लय, बाएँ तबले की दाब-खॉस व घुमक से शीघ्र ही पता लग जाता है कि यह किशन महाराज का बनारसी अंग का तबला है। आपको सन् 1973 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' अलंकार से विभूषित किया गया।

उस्ताद अल्ला रखा खाँ

अल्ला रखा खाँ जी का जन्म पंजाब प्रान्त के गुरुदासपुर जिला में सन् 1919 को हुआ था आपके पिता का नाम हाशिम अली था। बचपन से ही आपको गाने बजाने में विशेष रुचि थी अतएव आपने प्रारम्भ में उस्ताद कादिर बख्श के शिष्य लाल मुहम्मद से तालीम प्राप्त की। बाद में आपको उस्ताद कादिर बख्श से भी तबला सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

Scanned with CamScanner

आपने कुछ समय तक लाहौर, दिल्ली के आकाशवाणी केन्द्रों में नौकरी की किन्तु बाद में सन् 1937 में आप बम्बई चले आए। जहाँ आपका रूझान फिल्म क्षेत्र की ओर बढ़ने लगा। जिसके फलस्वरूप सनराइज़ पिक्चर, मोहन स्टूडियो, सादिक़ प्रोडक्शन आदि में कार्य किया तथा बाद में रंगमहल स्टूडियो में संगीत निर्देशन का पदभार भी सँभाला।

आपकी वादन शैली पंजाब घराने की है। तन्त्रवाद्यों के साथ संगति करने में आपकी सवाल-जवाब की संगति का कोई जवाब नहीं है। आपने न केवल देश में बल्कि विभिन्न देशों का भ्रमण कर विदेशों में भी अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर की पताका को फहराया है। पं. रविशंकर जैसे उच्चकोटि के सितार वादक के साथ आप अधिकतर संगति करते देखे जाते हैं। आपके सुपुत्र जाकिर हुसैन खाँ ने भी तबला-वादन में अपना एक विशेष मुक़ाम बना लिया है तथा वे एक ख्याति प्राप्त तबला वादक माने जाते हैं।

Scanned with CamScanner